(२) चले ससुराल...

चले ससुराल..ऐरावत पे हो सवार करे अनोखा श्रृंगार;
चले नेमी राजा ब्याह रचाने को, अपनी राजुलनार रिझाने को ॥ टेक ॥

बाजे हिल मिल देखो गाये, चारों तरफ बज रही बधाएँ;
दशों दिशायें मस्त हो रही, सखियाँ झूमें नाचे गायें ॥ 1 ॥

नभ सब झूम उठ रहे देख, दृश्य वो आला रे आला;
गजरथ घोड़े पयादे अनगिनत, लगती हो जैसे सेनाओ सेना।
सनमुख गज पर छत्र के नीचे त्रैलोक्यनाथ विराजा ओ राजा;
कोई कहीं का राजकुंवर तो कोई कहीं का राजा महाराजा ॥ 2 ॥

अभी ससुराल पहुँच भी न पाये, पड़ा पशुबन्धन का फेरा ओ फेरा;
यह सब देख प्रभु बिलखाए, जग से नाता तोड़ा ओ तोड़ा;
जग से रथ को मोड़ा ओ मोड़ा..... ॥ 3 ॥

चले नेमी राजा अब देखो वन के बाबा चले जाये गिरनार;
उनके पीछे राजुलनार, चले भव-भव के बन्धन छुड़ाने को ॥ 4 ॥